Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2684–2688

STUDY OF PROBLEMS AND CHALLENGES FACED BY ANGANWADI WORKERS

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को होने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों का अध्ययन

Mohammad Rafik [1], Dr. Chhabinath Yadav [2]

[1] Research Scholar, Mats University, Raipur, India
[2] Assistant Professor, Department of Social Work, Mats University, Raipur (CG), India

ABSTRACT

English: This research paper analyzes the challenges and problems faced by Anganwadi workers working under the Integrated Child Development Services (ICDS) scheme of India. Anganwadi workers play an important role in providing nutrition, health and early education to children aged 0-6 years and pregnant women. However, they face many obstacles in performing their work. Due to which there is a possibility of reduction in the accuracy of their work. The major challenges faced by Anganwadi workers include low salary, irregular payment, excessive workload, inadequate infrastructure (such as building, toilet, water), lack of adequate training, lack of community support and health-safety risks. These major problems affect the efficiency of Anganwadi workers, which in turn affects the quality of services provided to beneficiaries. This study shows the impact of such problems, such as dissatisfaction with work, strikes and increasing levels of malnutrition among children. The solutions presented include salary increase, appointment of support staff, development of infrastructure, regular training, community awareness and health facilities. The conclusion suggests measures that can improve the condition of Anganwadi workers, which greatly increases the chances of effective fulfillment of the objectives of the ICDS scheme. This research paper can serve as a guide for policy makers.

Hindi: यह शोध पत्र भारत की एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना के अंतर्गत कार्यरत आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों और समस्याओं का विश्लेषण करता है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताएँ बच्चों, जिनकी उम्र 0-6 वर्ष के मध्य है, गर्भवती महिलाओं को पोषण, स्वास्थ्य और प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालांकि उन्हें अपने कार्य को सम्पादित करने में बहुत सी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जिससे उनके कार्यों की शुद्धता में कमी आने की पूर्ण संभावना होती है, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को जो प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उसमे कम वेतन, अनियमित भुगतान, अत्यधिक कार्यभार, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा (जैसे भवन,शौचालय,पानी), पर्याप्त प्रशिक्षण न मिलना, सामुदायिक सहयोग की कमी और स्वास्थ्य-सुरक्षा जोखिम शामिल हैं। इन प्रमुख समस्याओं के कारण आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की कार्यक्षमता प्रभावित होती है, जिसका प्रभाव लाभार्थियों को मिलने वाली सेवाओं की गुणवत्ता पर पड़ता है। यह अध्ययन इस प्रकार की समस्याओं के प्रभावों को दिखाता है, जैसे कार्य के प्रति असंतोष, हड़ताल और बच्चों में कुपोषण का बढ़ता स्तर। समाधान के रूप में वेतन वृद्धि, सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति, बुनियादी ढांचे का विकास, नियमित प्रशिक्षण, सामुदायिक जागरूकता और स्वास्थ्य सुविधाएँ आदि प्रस्तुत की गई हैं। निष्कर्ष में यह बताया गया है कि किन उपायों से आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की स्थिति सुधर सकती है| जिससे ICDS योजना के उद्देश्य प्रभावी रूप से पूरे होने की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है। यह शोध पत्र नीति निर्माताओं के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकता है।

Keywords: Anganwadi Workers, Education, Health, Child Development, Pregnant Women, Children, Community आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता, शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल विकास, गर्भवती महिला, बच्चे, समुदाय

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5804

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

भारत सरकार द्वारा संचालित एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना देश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के 0-6 वर्ष बच्चों, गर्भवती महिलाओं और किशोरियों के लिए पोषण, स्वास्थ्य और प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की एक संगठित प्रयास है। इस योजना का आधार आंगनबाड़ी केंद्र होते हैं, जिसमे सुविधाओं को देकर सरकार 0-6 वर्ष बच्चों, गर्भवती महिलाओं और किशोरियों के जीवन को अच्छा बनाने का प्रयास करती है| जो समुदाय स्तर पर इन सेवाओं को लागू करते हैं। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताएं इन केंद्रों का प्राथमिक संचालन करती हैं और सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों को जमीनी स्तर पर लागु करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताएं केवल स्वास्थ्य और पोषण सेवाएँ प्रदान ही नहीं करती, बल्कि सामुदायिक जागरूकता के साथ मातृ-शिशु की देखभाल के क्षेत्र में भी अपनी भूमिका सुनिध्चित करती हैं।

इन कार्यकर्ताओं को अपने कार्यों को पूरा करने में विभिन्न चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक और बुनियादी ढांचे से संबंधित मुद्दे शामिल होते हैं, जो उनकी कार्य करने की क्षमता और मनोबल, आत्मविश्वाश को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। इस शोध पत्र में इन चुनौतियों और समस्याओं का वाचनालय विधि द्वारा अंतर्वर्स्तु विश्लेषण किया गया है और इनके समस्याओं का समाधान कैसे हो सकता है इसको ध्यान में रखते हुए कुछ व्यावहारिक सुझाव भी दिए गए है।

2. अध्ययन का उद्देश्य

- आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों और समस्याओं की पहचान करना।
- इन चुनौतियों एवं समस्याओं के कारण और प्रभावों का विश्लेषण करना।
- आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की कार्यकुशलता बढ़ाने और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए नीति में बदलाव संबंधी सुझाव प्रस्तुत करना।
- आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका की पहचान करना और उनमे दक्षता को बढ़ाना|

अनुसन्धान विधि: प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन हेतु वाचनालय विधि का उपयोग किया गया है, जिसमें इन्टरनेट, सरकारी योजनाओं और विभिन्न पत्र पत्रिकाओं आदि से प्राप्त जानकारी को शामिल किया गया है|

3. आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के मुख्य कार्य

- बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को पूरक पोषण आहार प्रदान करना।
- बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं के लिए टीकाकरण और स्वास्थ्य जाँच का आयोजन करना।
- गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य और पोषण संबंधी परामर्श देना।
- प्रारंभिक बाल शिक्षा और शाला-पूर्व तैयारी के लिए गतिविधियाँ संचालित करना।
- सरकारी योजनाओं को क्षेत्र की जनता तक पहुचाना|
- सरकारी योजनाओं का लाभ जो ले रहे है उनकी सारी जानकारी रखना और उपलब्ध डिजिटल पोर्टल पर डेटा अपडेट करना।
- समुदाय में स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाना।

यह बहुआयामी भूमिका उन्हें समाज के सबसे कमजोर वर्गों के लिए एक महत्वपूर्ण सहायक के रूप में ढालती है और यह भी बताती है कि कैसे आवश्यकता वाले लोगों की सहायता की जा सकती है|

4. आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ और समस्याएँ

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को अपने कार्य में कई प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसे हम प्रमुख रूप से निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं:

- कम वेतन और आर्थिक असुरक्षा:

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को "स्वयंसेवी" के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जिसके कारण उन्हें नियमित सरकारी कर्मचारियों की तरह वेतन और लाभ नहीं मिलते। उन्हें प्रतिमाह मानदेय 5,000-10,000 रुपये के बीच मिलता है, जो उनके कार्य के बोझ और जिम्मेदारियों के अनुरूप कदापि उचित

नहीं है। जिस मानदेय का भुगतान आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को किया जाता है वो भी उन्हें अनियमित रूप से किया जाता है, जिसके कारण उन्हें आर्थिक कमज़ोरी और संकट का सामना करना पड़ता है। कई कार्यकर्ताएँ अपने परिवार की एकमात्र कमाने वाली सदस्य होती हैं, जिससे यह समस्या और गंभीर हो जाती है। शर्मा, ए. ने अपने लेख में बताया है कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को समय में मानदेय का भुगतान नहीं किया जाता जिससे उन्हें आर्थिक असुरक्षा का सामना करना पड़ता है|2 (शर्मा, ए. 2023)

- अत्यधिक कार्यभार:

एक आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को कई जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं, जैसे बच्चों की देखभाल, रिकॉर्ड-कीपिंग, सामुदायिक सर्वेक्षण और स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करना। इसके अतिरिक्त, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को सरकारी योजनाओं के डेटा को डिजिटल अपडेट करने की भी जिम्मेदारी दी जाती है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता पर, सहायक कर्मचारियों की कमी के कारण कार्यभार और बढ़ जाता है। एक कार्यकर्ता को लगभग 50 से 100 बच्चों और उनके परिवारों की देखभाल करनी पड़ती है, जिससे वे शारीरिक और मानसिक रूप से थक जाते है| इस अतिरिक्त कार्यभार के कारण आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को पारिवारिक समस्याएं भी होती है क्योंकि वे अपने परिवार को समय नहीं दे पाती| चौहान पी. एवं वर्मा के. ने अपने लेख "में बताया है कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के ऊपर अत्यधिक कार्यभार होता है जिससे वे अपने परिवार को समय नहीं दे पाती जिससे उन्हें मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है|1 (चौहान पी. एवं वर्मा के. 2022)

- अपर्याप्त बुनियादी ढांचा:

बहुत से आंगनबाड़ी केंद्र किराए के छोटे कमरे या खुले स्थानों में संचालित होते हैं, जहाँ मुलभुत सुविधा नहीं होती, जैसे शौचालय, स्वच्छ पानी, बिजली और बैठने की उचित व्यवस्था। इससे लाभार्थी और कार्यकर्ता दोनों को असुविधा होती है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन सुविधाओं की कमी के कारण कार्यकर्ताओं को लंबी दूरी तय करके केंद्र तक जाना पड़ता है, जिससे समय और ऊर्जा की बर्बादी होती है| वर्मा, आर., और सिंह, पी. ने अपने अध्ययन में पाया है कि आंगनबाड़ी केन्द्रों में बुनियादी सुविधाओं का बहुत आभाव है जिससे वहां के कार्यकर्ताओं के साथ लाभार्थियों को भी समस्या होती है |3 (वर्मा, आर., और सिंह, पी. 2022)

5. प्रशिक्षण और तकनीकी कौशल की कमी:

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रारंभिक प्रशिक्षण तो दिया जाता है, लेकिन यह नियमित नहीं होता। नई स्वास्थ्य और पोषण नीतियों, डिजिटल उपकरणों और मोबाइल ऐप्स, जैसे पोषण ट्रैकर के उपयोग में उन्हें कठिनाई होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि सीमित होने के कारण तकनीकी कार्यों को समझना और लागू करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। जोशी, एम. & मिश्रा, एन. ने अपने अध्ययन में बताया कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को उचित प्रशिक्षण नहीं मिलता जिससे उन्हें अपने कार्यों को निष्पादित करने में काढने का सामना करना पड़ता है |4 (जोशी, एम., एवं मिश्रा, एन. 2020)

6. सामुदायिक सहयोग और सामाजिक बाधाएँ:

ग्रामीण समुदायों में शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण वहां के लोग आंगनबाड़ी सेवाओं को गंभीरता से नहीं लेते। कुछ परिवार बच्चों को केंद्र में भेजने से इनकार कर देते हैं या पोषण आहार को स्वीकार नहीं करते या स्वीकार करने में झिझकते है। इसमें लैंगिक भेदभाव और पारंपरिक मान्यताएँ भी बाधा डालती हैं। बहुत बार कार्यकर्ताओं को पुरुष-प्रधान समुदायों में सम्मान वह सम्मान नहीं मिलता, जिसकी उन्हें अपेक्षा होती है, इन कारणों से उनका कार्य प्रभावित होता है। तिवारी, एस., एवं चौहान, के. ने अध्ययन में पाया कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को सामाजिक सम्मान और सहयोग का भरी आभाव होता है, जिससे वे अपने कार्यों को जन समुदाय तक उचित तरीके से नहीं पंहुचा पाती|5 (तिवारी, एस., एवं चौहान, के. 2020).

7. स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी जोखिम:

लंबे समय तक काम करने और कार्यभार के कारण कार्यकर्ताओं में शारीरिक थकान, मानसिक तनाव और स्वास्थ्य समस्याएँ (जैसे कमर दर्द, उच्च रक्तचाप) आम बात हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में असुरक्षित मार्गों और परिवहन की कमी के कारण उनकी सुरक्षा भी खतरे में रहती है, विशेषकर शाम के समय में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताएं असुरक्षित महसूस करती है। पांडे, एन. ने अपने अध्ययन में बताया कि काम के घंटे ज्यादा होने के कारण भी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को स्वास्थ्य से जुडी समस्या होती है जिससे वे अपने कार्य पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते|6 (पांडे, एन.2023)

8. इन समस्याओं का प्रभाव

इन चुनौतियों का प्रभाव कार्यकर्ताओं पर तो पड़ता ही है, साथ ही ICDS योजना के उद्देश्यों पर भी पड़ता है:

कार्य कुशलता में कमी: अपर्याप्त संसाधन और जन समर्थन कार्यकर्ताओं की उत्पादकता को कम करते हैं। इससे उनकी कार्यकुशलता में भी कमी आती है और वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन सही ढंग से नहीं कर पाते|

लाभार्थियों पर प्रभाव: बच्चों और गर्भवती महिलाओं को समय पर पोषण और टीकाकरण नहीं मिल पाता, जिससे कुपोषण और बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

कार्य से असंतोष: खराब कामकाजी परिस्थितियों और कम वेतन के कारण कार्यकर्ताओं में कार्य के प्रति असंतोष बढ़ता है, जिसके परिणामस्वरूप हड़तालें और काम छोड़ने जैसी समस्या देखने को मिलती हैं। उदाहरण के लिए, हाल के वर्षों में कई राज्यों में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने वेतन वृद्धि और सुविधाओं की माँग को लेकर प्रदर्शन किए हैं। इसमें छत्तीसगढ़ राज्य भी शामिल है जहाँ आंगनबाड़ी कार्यकर्ताएं इन समस्याओं को लेकर हड़ताल कर चुकी है|

9. समाधान के सुझाव

इन समस्याओं को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

आर्थिक सुधार करना:

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को न्यूनतम मजदूरी के बराबर मानदेय (कम से कम 15,000-20,000 रुपये प्रतिमाह) दिया जाए और मानदेय को समय पर भुगतान किया जाए साथ ही उन्हें स्वास्थ्य बीमा, पेंशन और मातृत्व अवकाश जैसे लाभ प्रदान किए जाएँ। जिससे वे अपना जीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस कर सके|

10.कार्य को प्रबंधित करना

प्रत्येक केंद्र में एक सहायक कर्मचारी की नियुक्ति अनिवार्य की जाए जिससे प्रशासनिक कार्यों का बोझ कम हो। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के कार्य क्षेत्र को जनसंख्या के आधार पर सीमित किया जाए, जैसे प्रति कार्यकर्ता 50 बच्चों की देखभाल का दायित्व दिया जाए। जिससे वे अपने कार्य को अछे से निष्पादित कर सके| गुप्ता, एस. ने अपने अध्ययन में पाया है कि कार्य के बोझ के कारण आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अपना कार्य व्यवस्थित तरह से नहीं कर पाती, लेकिन सभी केन्द्रों में सहायिका की नियुक्ति को अनिवार्य कर दिया जाए तो आंगनबाड़ी का कार्य सरल एवं व्यवस्थित्त तरीके से हो जयेगा|7 (गुप्ता, एस. 2021)

10.1.बुनियादी ढांचे का विकास

सभी आंगनबाड़ी केंद्रों को पक्के भवन में परिवर्तित किया जाए, शौचालय, स्वच्छ एवं पिने योग्य पानी और बिजली की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। ग्रामीण क्षेत्रों की कार्यकर्ताओं को साइकिल या परिवहन भत्ता प्रदान किया जाए। जिससे वे असुरक्षित महसुस न करें|

10.2.प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम

कार्यकर्ताओं के लिए हर छह महीने में प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाएँ, जिसमें पोषण, स्वास्थ्य, स्वच्छता और डिजिटल साक्षरता पर ध्यान दिया जाए। कार्यकर्ताओं में नयी नीतियों की जानकारी और समझ को बढ़ाने के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए जाए| स्मार्टफोन और इंटरनेट डेटा मुफ्त प्रदान किया जाए जिससे कि वे डिजिटल रिकॉर्ड आसानी से अपडेट कर सकें।

10.3.सामुदायिक जागरूकता को बढ़ाना

पंचायतों और स्थानीय नेताओं के सहयोग से जागरूकता अभियान चलाए जाएँ, जिसमें जन समुदाय को आंगनबाड़ी सेवाओं का महत्व समझाया जाए। स्कूलों और सामुदायिक समारोहों में अभिभावकों को शामिल किया जाए। जिससे वे जागरूक हो सके|

10.4. स्वास्थ्य और सुरक्षा

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के कार्य समय को 6-8 घंटे तक सीमित किया जाए और अतिरिक्त कार्य के लिए अतिरिक्त भुगतान दिया जाए। कार्यकर्ताओं के लिए नियमित स्वास्थ्य जाँच और तनाव प्रबंधन कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ। जिससे वे तनावमुक्त रहकर अपने कार्यों को कर सके|

11. निष्कर्ष

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताएँ भारत के विकास और स्वास्थ्य सुधार की आधारशिला हैं। उनकी मेहनत और समर्पण के बिना ICDS योजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकती। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को मिलने वाला कम वेतन, कार्य का अधिक बोझ, अपर्याप्त संसाधन और सामाजिक बाधाएँ उनके कार्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। लेकिन यदि इन समस्याओं का समाधान कर दिया जाता है तो न केवल कार्यकर्ताओं की कार्यक्षमता और जीवन स्तर में सुधार होगा, बल्कि बच्चों, महिलाओं और समुदायों के स्वास्थ्य और शिक्षा के स्तर में भी वृद्धि होगी। सरकार को इन सुझावों पर त्वरित और प्रभावी कदम उठाने चाहिए ताकि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को उचित सम्मान और सामाजिक सहयोग मिल सके। यह न केवल एक नीतिगत आवश्यकता है, बल्कि सामाजिक न्याय के लिए भी यह आवश्यक है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

चौहान पी. एवं वर्मा के (2022). आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर कार्यभार का प्रभाव: एक गुणात्मक अध्ययन। भारतीय स्वास्थ्य और विकास जर्नल, 8(4), 112-125।)

शर्मा, ए. (2023). आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की आर्थिक चुनौतियाँ: एक सामाजिक अध्ययन. भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 45(2), 123-135.

वर्मा, आर. & सिंह, पी. (2022). ग्रामीण भारत में आंगनबाड़ी केंद्रों की बुनियादी सुविधाओं की कमी. स्वास्थ्य और विकास पत्रिका, 18(3), 89-102.

जोशी, एम., & मिश्रा, एन. (2020). आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता और वास्तविकता. सामुदायिक विकास अध्ययन, 33(1), 45-59.

तिवारी, एस., & चौहान, के. (2020). सामाजिक सम्मान और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की पहचान. भारतीय समाज अध्ययन, 27(1), 12-25.

पांडे, एन. (2023). काम के घंटों और स्वास्थ्य पर प्रभाव: आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का विश्लेषण. स्वास्थ्य नीति जर्नल, 19(2), 67-80.

गुप्ता, एस. (2021). आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर प्रशासनिक बोझ: रिकॉर्ड प्रबंधन की समस्याएँ. शैक्षिक अनुसंधान जर्नल, 12(4), 56-67.

कुमार, वी. (2019). अस्थायी रोज़गार और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का मनोबल. भारतीय श्रम जर्नल, 22(5), 78-90.

राठौर, पी. (2023). पर्यवेक्षण की कमी और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की कार्यक्षमता. ग्रामीण भारत पत्रिका, 10(2), 34-48.

मेहता, डी., & यादव, ए. (2021). सीमित संसाधनों के बीच बच्चों की पोषण देखभाल: आंगनबाड़ी की चुनौतियाँ. पोषण विज्ञान जर्नल, 15(3), 101-115.

सिन्हा, आर. (2022). डिजिटल तकनीक और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की तैयारी: एक अंतराल. तकनीकी शिक्षा जर्नल, 8(4), 23-37.

Gupta, R., & Sharma, S. (2020). Challenges faced by Anganwadi workers in rural India: A qualitative study. Journal of Rural Health Studies, 12(3), 45-58.

Patil, R., & Deshmukh, S. (2022). Infrastructure deficiencies in Anganwadi centres: A nationwide survey. Health and Social Care in the Community, 30(5), 1890-1900.